

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं मास्टर रचयिता हूँ।

जैसा बीज होता है, वैसा ही वृक्ष व फल होते हैं। जैसा रचता होता है, वैसी ही उसकी रचना होती है। यदि रचता कमजोर होगा तो उसकी पूरी रचना भी कमजोर होगी। यदि रचता व्यर्थ और निगेटिव से ही सदा घिरा रहता होगा तो उसकी रचना भी... यदि रचता समर्थ होगा तो... अब सोच लें कि आप अपनी रचना को कैसा देखना चाहते हैं?

योगाभ्यास - मैं मास्टर रचना कल्पवृक्ष के जड़ में बैठा हूँ...सारा कल्पवृक्ष मुझसे जुड़ा हुआ है...मैं विश्व रचता, सर्वशक्तिवान, ज्ञान सूर्य बाबा से शक्तियों की किरणों लेकर सारे कल्पवृक्ष में फैला रहा हूँ। मैं इस देह का मालिक हूँ... देह

के मालिक बनने वाले ही प्रकृति व विश्व के मालिक बनेंगे...इसलिए देह के मालिक बनकर अपने सर्व सूक्ष्म व स्थूल कर्मन्द्रियों को ऑर्डर में चलायें।

धारणा - न्यारा और प्यारा।

शिव भगवानुवाच - सदा कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रहे कि मैं कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी आत्मा हूँ। जब आपकी रचना कमल न्यारा रह सकता है तो आप मास्टर रचता उससे भी ज्यादा न्यारे नहीं रह सकते? जितना देह और दुनिया से न्यारे रहेंगे, उतना बाप का प्यार मिलेगा।

चिन्तन - न्यारी और प्यारी स्थिति क्या

है? कहाँ न्यारा बनना चाहिए और कहाँ प्यारा? न्यारेपन और प्यारेपन के बीच बैलेन्स कैसे रखें? न्यारे और प्यारे के लिए उच्चारें गए बाबा के पाँच महावाक्य लिखें।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - प्रिय आत्मन्। जैसे साकार ब्रह्मा बाबा से सबने उनके जीवन के आदि से अंत तक दर्शनीयमूर्त अनुभव किया, वैसे ही आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा महसूस करे कि ये न्यारे, अलौकिक व दर्शनीयमूर्त हैं। आपका हर बोल, कर्म, चलन व चेहरा स्वतः सिद्ध करे कि इन्हें ऐसा बनाने वाला कौन! आपका प्रैक्टिकल जीवन ही रचता बाप को प्रत्यक्ष करेगा।

स्वमान - मैं मास्टर मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हूँ।

शिवभगवानुवाच - मुक्ति और जीवनमुक्ति के मास्टर दाता बनने की विधि है - सेकेण्ड में देहभान से मुक्त हो जायें। जैसे इन स्थूल कर्मन्द्रियों को जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें वैसे यूज कर सकते हो, ऐसे ही मन के ऊपर इतना कन्ट्रोल हो कि जब चाहें जिस स्थिति में चाहें, जितना समय चाहें, उतना समय एकाग्र हो जायें, अचल हो जायें।

योगाभ्यास - अ. मैं आत्मा राजा भृकुटि सिंहासन पर... सभी स्थूल-सूक्ष्म कर्मन्द्रियां मेरे सामने... एक-एक कर्मन्द्रियों से हालचाल पूछें... और उनकी महानताओं को याद

दिलायें...फिर योग के द्वारा प्रत्येक कर्मन्द्रियों को प्योर वायब्रेशन्स दें... अनुभव करें कि सभी कर्मन्द्रियां शांत, शीतल और सुगंधित हो रही हैं।

ब. रुहानी ड्रील - तीनों लोकों की सैर करते हुए स्वयं को एकाग्र करें - कभी मैं फरिश्ता ग्लोब के ऊपर... कभी वतन में बापदादा के सम्मुख... तो कभी परमधाम में ज्ञान सूर्य की किरणों के नीचे...।

धारणा - निमित्त भाव। सदा याद रहे - करावनहार बाप मुझ करनहार आत्मा द्वारा सेवा करा रहे हैं। मैं आत्मा निमित्त हूँ। निमित्त भाव से निर्माण स्थिति स्वतः ही हो जाती है और निर्माण स्थिति से

देहभान सवतः ही समाप्त हो जाता है।

चिन्तन - क्यों आवश्यक है एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाना? कौन-कौन सी बातें हमारी एकाग्रता को भंग करती हैं? एकाग्रता की शक्ति को कैसे बढ़ायें? एकाग्रता के लिए बाबा के महावाक्य।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - प्रिय साधकों! एकाग्रता से हमें सर्व शक्तियाँ और सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। एकाग्रता से एक बाप से सारे संसार की सर्व प्राप्तियों का अनुभव होता है और हर कार्य में सहज सफलता भी प्राप्त होती है। अतः आप सारे दिन में अपने मन-बुद्धि को बार-बार एकाग्र करने का अभ्यास करते रहें।

पवित्रता के प्रतीक... - पेज 4 का शेष

का आह्वान करने के लिए पहले तो भारत के वासियों के आहार-व्यवहार-विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज तो भारत में घर-घर में 'काम' बसता है, सभी के मन में 'दाम' बसता है। श्री कृष्ण को पधारने के लिए तो कोई जगह ही खाली नहीं है, तब एक नगर के दो राजा कैसे हो सकते हैं? देखा जाता है कि 'सन्यासी' और 'महात्मा' लोग अपनी साधना अथवा पुरुषार्थ से पवित्रता को प्राप्त करते हैं। वे जन्म से ही महात्मा नहीं होते हैं। जब से महात्मा बनते हैं, तभी उनके चित्रों में उनके सिर के पीछे प्रकाश का ताज (प्रभामण्डल) अंकित किया जाता है, परंतु श्रीकृष्ण को

तो शिशु काल से ही रत्न-जड़ित मुकुट के साथ 'प्रकाश का ताज' प्राप्त था। वे जन्म से ही निर्विकारी थे और इसलिए उनके रत्नजड़ित मुकुट के अंदर मोर पंख भी लगाते हैं और उन्हें मोर 'मुकुटधारी' भी कहते हैं। जन्म से ही पवित्रता का तथा रत्न जड़ित ताज प्राप्त होने से सिद्ध है कि श्रीकृष्ण ने पूर्व जन्म में कोई बहुत ही महान पुरुषार्थ किया होगा, जिसके फलस्वरूप उन्हें स्वस्थ एवं सुंदर तन, निर्मल मन, अतुल धन और अनुपम सममान प्राप्त हुआ। हमें भी उनके महान पुरुषार्थ को जानना होगा। हमारा कर्तव्य है कि हम उनके उच्च जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन भी वैसा उच्च बनाने का यथार्थ पुरुषार्थ करें।

मोहन की झाँकी... - पेज 10 का शेष

दिखाई जाती है? आप भी इसपर सोच सकते हैं, परंतु हम कुछ आपको अवश्य बताना चाहेंगे कि जब बालक छोटा होता है, उस समय उसे सम्पूर्ण पवित्र माना जाता है, उस समय उसकी की गई सभी हरकतों को आप बड़े चाव से देखते हैं तथा उसे याद रखने के लिए उसकी फिल्म भी बनाके रखते हैं। उस समय विकार की उसमें बू भी नहीं आती। इसी प्रकार श्रीकृष्ण जी थे, चूंकि वे दिव्य गुण से सजे-सजाये थे इसलिए उन्हें और गहराई से याद किया जाता है।

तो झाँकी का अर्थ यह हुआ कि जिसने अपने जीवन में, अपने व्यक्तित्व में हर क्षण, हर पल अपनी गलतियों को झाँक-झाँक के देखा और उसे ठीक भी किया, तभी तो एक भी दाग कृष्ण के व्यक्तित्व पर दिखाई नहीं देते। तो हमें इस कृष्ण जन्माष्टमी पर कृष्ण के व्यक्तित्व से क्या लेना है? क्या सिर्फ उनकी झाँकी देखकर,

संतुष्ट होकर अपने घर आ जाना है या फिर अपने भीतर की बुराइयों को झाँक कर के नष्ट करना है। तो आप भी अपने जीवन में अवश्य झाँकें, तभी कृष्ण की झाँकी के साथ न्याय होगा, और यदि वे आपके आदर्श हैं तो आप उन्हें अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन कर सच्ची सौगात दे पायेंगे।



रावगडा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए आचार्य राजेन्द्र जी, पतंजलि योग गुरु, हरिद्वार। साथ हैं जगन्नाथ मोहन-ती, कलेक्टर एंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, डॉ. सुरेन्द्र कुमार बेहेरा, जिला अध्यक्ष, पतंजलि योग समिति व ब्र.कु. श्रीमती।



पाँस्को। आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में माउण्ट आबू से ब्र.कु. रामलोचन, ब्र.कु. सूर्यमणि व ब्र.कु. पद्मनाभ। साथ हैं ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. विजय व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।



इलाहाबाद। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. सुप्रभा, स्वामी विद्यानंद, सच्चा आश्रम, डॉ. ए.वी. वान्डे, डायरेक्टर, कॉलेज ऑफ़ हॉस्पिटल, ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. मनोरमा व डॉ. अन्जू गुप्ता, रोड्री प्रेसीडेंट।



वरनाला-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए राजपाल शर्मा, मैनेजर, श्री शांति सिरप, डॉ. त्रिलोकी, प्रो. प्रेम शर्मा, चरणजीत मिश्र, प्रिन्सीपल, सेन्ट्रल हाई स्कूल, एयरफोर्स, ब्र.कु. डॉ. प्रो. सीमा, ब्र.कु. ब्रिज बहन व अन्य।



वीरगंज-नेपाल। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'स्वस्थ एवं सुखी समाज हेतु राजयोग का महत्व' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए भारतीय महावाणिज्य राजदूत अन्जू जी, ब्र.कु. रविणा, ब्र.कु. बेली, रेडक्रॉस की पूर्व अध्यक्ष मधु राणा व समाजसेवी उषा शाह।



उज्जैन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग में डिटेन्शन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. निरुपमा व म.प्र. के शिक्षामंत्री पारस जैन।



आगरा-कमला नगर। आगरा कॉलेज के ग्राउण्ड में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उपस्थित हैं सर्वधर्म के प्रतिनिधि तथा अन्य समाजसेवी संगठन के प्रतिनिधियों के साथ ब्र.कु. शशि।